परमात्म ऊर्जा

जहाँ निमित्त भाव है वहाँ निर्मान भाव ऑटोमेटिकली आ जाता

बापदादा क भी- कभी बच्चों के जमा का खाता देखते हैं। तो कहाँ-कहाँ मेहनत ज़्यादा है लेकिन जमा का फल कम है। कारण? दोनों तरफ की सन्तुष्टता की कमी। अगर सन्तुष्टता का अनुभव नहीं किया, चाहे स्वयं, चाहे दूसरे तो जमा का खाता कम होता है। बापदादा ने जमा का खाता बहुत सहज बढ़ाने की गोल्डन चाबी बच्चों को दी है। जानते हो वह चाबी क्या है? मिली तो है ना! सहज जमा का खाता भरपूर करने की गोल्डन चाबी है- कोई भी मन्सा-वाचा-कर्मणा, किसी में भी सेवा करने के समय एक तो अपने अन्दर निमित्त भाव की स्मृति हो। निमित्त भाव, निर्माण भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव, अगर इस भाव की स्थिति में स्थित होकर सेवा करते हो तो सहज आपके इस भाव से आत्माओं की भावना पूर्ण हो जाती है। आज के लोग हर एक का भाव क्या है, वह नोट करते हैं। निमित्त भाव से कर रहे हैं व अभिमान के भाव से! जहाँ निमित्त भाव है वहाँ निर्मान भाव ऑटोमेटिकली आ जाता है। तो चेक करो- क्या जमा हुआ? कितना जमा हुआ? क्योंकि इस समय संगमयुग ही जमा करने का युग है। फिर तो सारा कल्प जमा की प्रालब्ध है।

जो परमात्म संग के रंग में प्राप्त किया वो सबको बांटो

परमात्मा! कहेंगे ज़रूर। तो आप परमात्म बच्चों को अभी दुखियों का सहारा बनना है। उन्हों का शुभ भावना शुभ कामना द्वारा, बाप द्वारा प्राप्त हुई किरणों द्वारा सहारा बनो। फिर भी आपका परिवार है ना! तो परिवार में एक-दो को सहयोग देते हैं ना! तो नाम ही है सह योग, श्रेष्ठ योग। वही साधन है सहारा देने का। सन्देश भी भेजा था कि समय फिक्स करो। ऐसे नहीं हो जायेगा जैसे ट्राफिक कन्ट्रोल अमृतवेला निश्चित है तो करते हो ना! ऐसे अपने कार्य प्रमाण यह मन्सा सेवा भी अभी के समय प्रमाण अति आवश्यक है। तो समय निकालो रहमदिल बनो, कल्याणकारी बनो। आपका स्वमान क्या है? विश्व कल्याणकारी। तो रहम आता है कि हो जायेगा? इसमें अलबेले नहीं बनना क्योंकि जिन्हों को आप साकाश देंगे वही आपके भक्त बनेंगे इसलिए क्या करना है? है अटेन्शन?

बापदादा ने तो बहुत समय से अचानक का पाठ पढ़ाया है। लेकिन अभी प्रत्यक्ष रूप में देख करके अभी अपना काम शुरु करो, घबराओ नहीं। कहानी सुनाते हैं ना - चारों ओर आग लगी लेकिन परमात्मा के बच्चे सेफ रहे। तो अभी भी बच्चे तो सेफ हैं ना! पेपर तो आने ही हैं लेकिन आपका डबल काम है। एक तो निर्भय होके सामना करो, दूसरा अपने भक्त और अपने दुःखी भाई-बहनों की सेवा भी कौन करेगा? आप प्रभु के संग में रंगे हुए हो तो जो परमात्मा के संग के रंग में प्राप्त किया है वह अपने भाई-बहनों को, भक्तों को खूब प्यार से दिल से बांटों। दुःख के समय कौन याद आता है? फिर भी परमात्मा चाहे समझें चाहे नहीं समझें लेकिन मजबूरी से भी हे बाप! हे

अगर इतने सभी ने अपने स्वमान को प्रैक्टिकल में लाया तो आत्मायें अभी भी संगम पर आपके दिल से गीत गायेंगे वाह परमात्म बच्चे वाह! तो पूर्वज हो ना! आवाज़ सुनने आता है भक्तों का? थोड़ा अपने को सावधान करो। दुखियों का सहारा बनना ही है तो आवाज़ सुनने आयेगी।

कथा सरिता

हमारे जीवन की महत्ता

पहला दीपक बोला, "मैं हमेशा बड़ा बनना चाहता था। सुंदर और आकर्षक घड़ा बनना चाहता था पर क्या करूँ ज़रा-सा दीपक बन गया।"

दूसरा दीपक बोला, "मैं भी अच्छी भव्य मूर्ति बनकर किसी अमीर आदमी के घर की शोभा बढ़ाना चाहता था, पर क्या करूँ कुम्हार ने मुझे एक छोटा-सा दीपक बना दिया।"

तीसरा दीपक बोला, "मुझे बचपन से ही पैसों से प्यार है, काश मैं गुल्लक बनता तो हमेशा पैसों से भरा रहता। पर मेरी किस्मत में ही दीपक बनना लिखा होगा।

चौथा दीपक खामोश रहकर उनकी बातें सुन रहा था। अपनी-अपनी प्रतिक्रिया देने के बाद तीनों दीपों ने चौथे दीपक से भी अपनी ज़िंदगी के बारे में कुछ कहने को कहा।

चौथे दीपक ने कहा - भाईयों कुम्हार जब मुझे बना रहा था तो मैं बहुत खुश हो रहा था, क्योंकि वह मुझे बनाते वक्त प्रसन्न था। उसने जब मुझे बनाया तो मैं अपने जीवन के प्रति कृतज्ञ हो गया कि मैं एक बिखरी हुई मिट्टी से एक सुंदर दीपक बन गया जो अंधेरे को दूर करने का साहस रखता है।

मैं वो साहसी दीपक हूँ जिसके जलते ही अंधेरा छू मंतर हो जाता है। मैं आभारी हूँ उस कुम्हार का जिसने मुझे ऐसा रूप दिया कि मुझे भगवान के सामने मंदिरों में प्रज्जवलित किया जाता है। मेरी रोशनी में पढ़कर ना जाने कितने होनहार बच्चे आज बड़े-बड़े ऑफिसर बन गए हैं और देश की सेवा कर रहे हैं। मेरा प्रकाश सिर्फ अंधेरे को ही दूर नहीं करता बल्कि एक नई उम्मीद और नई ऊर्जा का संचार करता है।

चौथे दीपक की बातें सुनकर अन्य तीनों दीपों को भी अपने जीवन का महत्व समझ में आ गया।

दोस्तों, अक्सर हम इंसान को जो मिलता है या जो हम हैं उससे संतुष्ट नहीं होते और उन तीन दीपकों की तरह अपने कुम्हार यानी ईश्वर से शिकायत करते रहते हैं लेकिन अगर हम ध्यान से देखें तो हमारा जीवन अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है और हम जो हैं उसी रूप में इस जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

इसलिए चौथे दीपक की तरह हमें भी जो हैं उसमें संतुष्ट होकर अपना सर्वश्रेष्ठ जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

हर कार्य हो सूझ-बूझ से

एक मकड़ी थी। उसने आराम से रहने के लिए एक शानदार जाला बनाने का विचार किया और सोचा कि इस जाले में खूब कीड़े, मक्खियां फँसेंगी और मैं उसे आहार बनाऊंगी और मजे से रहूंगी। उसने कमरे के कोने को पसंद किया और वहाँ जाला बुनना शुरु किया। कुछ देर बाद आधा जाला बुन कर तैयार हो गया। यह देखकर वह मकड़ी काफी खुश हुई कि तभी अचानक उसकी नज़र एक बिल्ली पर पड़ी जो उसे देखकर हँस रही थी।

मकड़ी को गुस्सा आ गया और वह बिल्ली से बोली, "हँस क्यों रही हो?" हँसू नहीं तो क्या करूँ, बिल्ली ने जवाब दिया। यहाँ मक्खियां नहीं है ये जगह तो बिल्कुल साफ सुथरी है। यहाँ कौन आयेगा तेरे जाल में।"

ये बात मकड़ी के गले उतर गई। उसने अच्छी सलाह के लिए बिल्ली को धन्यवाद दिया और जाला अधूरा छोड़कर दूसरी जगह तलाश करने लगी। उसने ईधर-उधर देखा तो उसे एक खिड़की नज़र आयी और फिर उसमें जाला बुनना शुरु किया कुछ देर तक वह जाला बुनती रही, तभी एक चिड़िया आयी और मकड़ी का मज़ाक उड़ाते हुए बोली, "अरे मकड़ी, तू भी कितनी बेवकूफ है।"

"क्यों?" मकड़ी ने पूछा।

चिड़िया उसे समझाने लगी, "अरे यहाँ तो खिड़की से तेज हवा आती है। यहाँ तो तू अपने जाले के साथ ही उड़ जायेगी।"

मकड़ी को चिड़िया की बात ठीक लगी और वह वहाँ भी जाला अधूरा बना छोड़कर सोचने लगी अब कहाँ जाला बनाया जाये। समय काफी बीत चुका था और अब उसे भूख भी लगने लगी थी। अब उसे एक अलमारी का खुला दरवाजा दिखा और उसने उसी में अपना जाला बुनना शुरु किया। कुछ जाला बुना ही था तभी उसे एक कॉक्रोच नज़र आया जो जाले को अचरज भरी नज़रों से देख रहा था।

मकड़ी ने पूछा, "इस तरह क्यों देख रहे हो?"

कॉक्रोच बोला, अरे यहाँ कहाँ जाला बुनने चली आयी ये तो बेकार की अलमारी है। अभी ये यहाँ पड़ी है कुछ दिनों बाद इसे बेच दिया जायेगा और तुम्हारी सारी मेहनत बेकार चली जायेगी। यह सुनकर मकड़ी ने वहाँ से हट जाना ही बेहतर समझा।

बार-बार प्रयास करने से वह काफी थक चुकी थी और उसके अन्दर जाला बुनने की ताकत ही नहीं बची थी। भूख की वजह से वह परेशान थी। उसे पछतावा हो रहा था कि अगर पहले ही जाला बुन लेती तो अच्छा रहता। पर अब वह कुछ नहीं कर सकती थी उसी हालत में पड़ी रही। जब मकड़ी को लगा कि अब कुछ नहीं हो सकता तो उसने पास से गुजर रही चींटी से मदद करने का आग्रह किया।

चींटी बोली, "मैं बहुत देर से तुम्हें देख रही थी, तुम बार-बार अपना काम शुरु करती और दूसरों के कहने पर उसे अधूरा छोड़ देती, और जो लोग ऐसा करते हैं उनकी यही हालत होती है। और ऐसा कहते हुए वह अपने रास्ते चली गई और मकड़ी पछताती हुई निढ़ाल पड़ी रही।

हमारी ज़िंदगी में भी कई बार कुछ ऐसा ही होता है, हम दूसरों की बातों को सुनकर अपना कार्य करना ही छोड़ देते हैं। बाद में जब हमें पता चलता है कि हम तो अपनी मंज़िल के बहुत करीब थे तब हमारे हाथ पछतावे के अलावा और कुछ नहीं लगता। इसीलिए हमें हर कार्य अपनी सूझ-बूझ से, सोच-विचार कर करना चाहिए।

आंवला-बरेली(उ.प्र.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्लॉक प्रमुख श्रीमति आरती यादव, विभिन्न गांवों से आये ग्राम प्रधान, ब्र.कु. पार्वती बहन, ब्र.कु. नीता बहन तथा अन्य।

कोरापुट-ओडिशा। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में किसान भाई-बहनों को सम्मानित करने के पश्चात् सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. स्वर्णा बहन।

महेश्वर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के 'विश्व दर्शन भवन' में आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. अनिता बहन तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।